1 अक्तूबर 2021 ■ ₹ 15

फार्म एन फूड

जमीन में यकीन, यकीन में धन

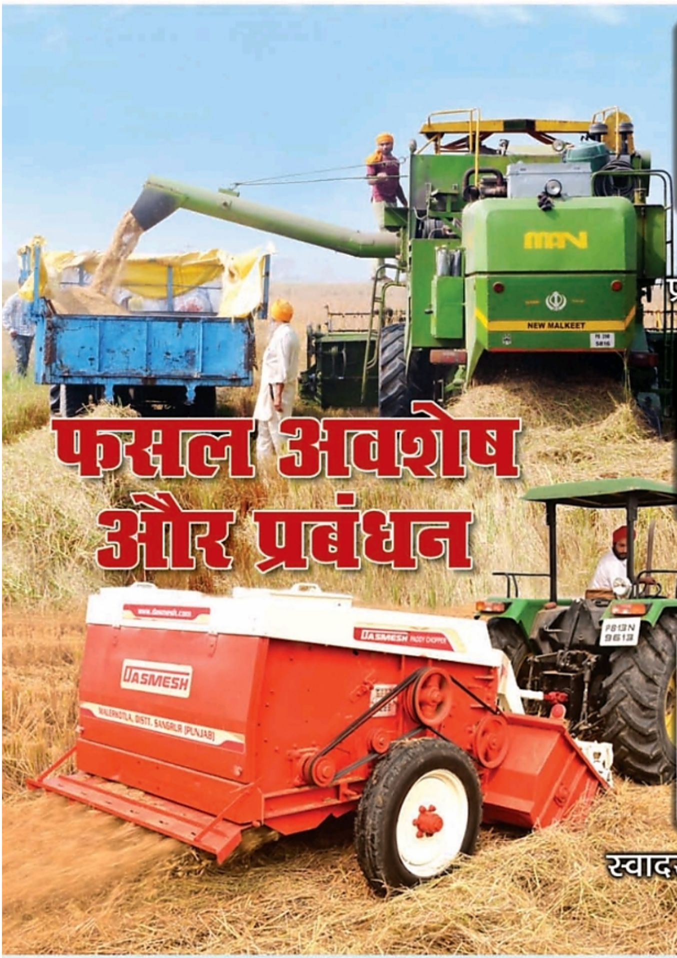

फसल अवशेष और प्रबंधन

खेती में जल प्रबंधन के उपाय

पशुपालन को बनाएं उद्योग

स्वादसुगंध से भरपूर अल्पान केला

www.sarita.in/farm-n-food

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Divisa
www.divisastore.com

सच्ची सहेली®

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

कठिन दर्द

चिड़चिड़ापन

थकान

कमजोरी

कमर कटना

इम्यूनिटी

आदि में सहायक

सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
67 जड़ी-बूटियों से बना,
महिलाओं के लिए गुणकारी आयुर्वेदिक टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli

Available at all medical & general stores

संपादकीय

आप के लिए

27 सितंबर को किसान नेताओं ने 3 कृषि कानूनों के खिलाफ फिर देशव्यापी आंदोलन कर के यह जता दिया कि वे केंद्र सरकार के सामने नहीं झुकने वाले हैं और किसान विरोधी कानून उन्हें नहीं चाहिए.

इसी का नतीजा यह रहा कि इस भारत बंद से ठीक पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गन्ने की कीमतों में 25 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ोतरी का फैसला लिया. अब तक जिस गन्ने का दाम 325 रुपए प्रति क्विंटल था, वह अब 350 रुपए प्रति क्विंटल कर दिया गया है.

इस से यह तो तय हो गया है कि किसान धीरेधीरे केंद्र और राज्य सरकारों पर दबाव डाल रहे हैं और अपने आंदोलन को पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश से निकाल कर देश के दूसरे राज्यों में फैला रहे हैं.

किसान नेता राकेश टिकैत तो साफ कह भी चुके हैं कि अगर यह आंदोलन 10 साल तक भी चलाना पड़ा तो वे पीछे नहीं हटेंगे. गुरनाम सिंह चढूनी तो उन से भी दो कदम आगे बढ़ कर बोले कि अगर किसानों की मांगें जल्द नहीं मानी गईं तो वे प्रधानमंत्री की कोठी के आगे टैंट लगाएंगे.

किसान नेताओं के ऐसे तेवरों और भारत बंद जैसे कड़े कदमों से यह आंदोलन मजबूत होगा और हर जगह शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने से वे पहले से ज्यादा एकजुट होंगे, जो सरकार के लिए खतरे की घंटी बन सकता है.

लिहाजा, सरकार को अपना अड़ियल रवैया छोड़ कर किसानों की मांग मान लेनी चाहिए और इस आंदोलन का स्थायी हल निकाल लेना चाहिए.

इस में जो...

फसल अवशेष और इस का प्रबंधन 4

खाद्यान्न फसलों से तकरीबन 70 फीसदी फसल अवशेष प्राप्त होता है, जिसे अगर जलाया जाए तो उस का पर्यावरण पर बहुत ज्यादा बुरा असर पड़ता है. साथ ही, पशुओं के लिए चारे की कमी भी हो जाती है. इस का हल यह है कि फसल अवशेषों का अच्छी तरह प्रबंधन किया जाए, जिस से किसानों की आय भी बढ़ सकती है.

6 जैविक खेती का महत्त्व
8 खेती में जल प्रबंधन के उपाय
10 बकरीपालन मोबाइल एप
11 खबरें खेतखलिहानों की
14 सवाल किसानों के
16 हराभरा स्मार्ट गांव पिपलांत्री देश में ही नहीं विदेशों तक धमक
18 अक्तूबर महीने में जानें खेती से जुड़े काम
21 पशुपालन को बनाएं उद्योग

स्वादसुगंध से भरपूर अल्पान केला (बिहार का चीनिया केला) 22

अल्पान केले को बिहार का चीनिया केला भी कहा जाता है. यह वैरायटी स्वाद में तो मीठी होती ही है, साथ ही यह पौष्टिक भी होती है. बहुत से किसान इस की खेती कर के अच्छाखासा मुनाफा कमा रहे हैं. पर इस के लिए कुछ जरूरी बातें जान और समझ लेनी चाहिए.

फार्म एन फूड
1 अक्तूबर 2021, अंक: 351
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

दिल्ली प्रैस
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, बैंगलुरु-560052. ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय). बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय). 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा, कोलकाता-700026. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मोंटीअथ रोड, चेन्नई-600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, लखनऊ-226001. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, भोपाल-462011. 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, पटना-800001. गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, जयपुर-302006. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से : छपने के लिए भेजे जाने वाले लेख वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी रचनाएं ज्यादा पसंद की जाएंगी.

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Pte. Ltd., New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल:
article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ई मेल:
invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल:
editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल:
subscription@delhipress.in

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

फार्म एन फूड पत्रिका की एक प्रति की कीमत 15 रु.
1 साल के लिए 589 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)
2 साल के लिए 1139 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

फसल अवशेष और इस का प्रबंधन

*** डा. संदीप कुमार, डा. शैलेश कुमार सिंह, डा. सोमेंद्र नाथ, डा. अश्विनी कुमार सिंह, प्रो. रवि प्रकाश मौर्य**

कृषि में संसाधन संरक्षण तकनीक स्थायी रूप से दीर्घकालीक खाद्य उत्पादन में सहायक होता है, परंतु मशीनों के अधिक प्रयोग से मृदा उर्वरता में कमी आने लगती है. धानगेहूं फसल प्रणाली में आधुनिक व बड़े आकार के फार्म मशीनरी जैसे कंबाइन हार्वेस्टर, रोटावेटर, सीड ड्रिल वगैरह की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है.

इस प्रकार की कृषि प्रणाली में ज्यादातर किसान फसल अवशेषों को जला दे रहे हैं, जो वातावरण के लिए एक गंभीर समस्या है. नवीन और नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार, भारत में हर साल 500 मिलियन टन फसल अवशेषों का उत्पादन होता है और दूसरे प्रदेशों की तुलना में उत्तर प्रदेश में सब से ज्यादा 60 मिलियन टन फसल अवशेषों का उत्पादन होता है, जिस का उपयोग घरेलू और औद्योगिक क्षेत्रों में किया जा सकता है.

अगर फसलों की बात की जाए, तो सब से ज्यादा खाद्यान्न फसलों (धान, गेहूं, मक्का इत्यादि) से तकरीबन 70 फीसदी फसल अवशेष प्राप्त होता है.

फसल अवशेष जलाने के हानिकारक प्रभाव

पोषक तत्त्वों का अधिक मात्रा में नुकसान : फसल अवशेषों को जलाने से उस में पाए जाने वाले पोषक तत्त्वों का काफी मात्रा में नुकसान हो जाता है. एक शोध के अनुसार एक टन धान की पराली जलाने से 5.5 किलोग्राम नाइट्रोजन, 2.3 किलोग्राम फास्फोरस, 25 किलोग्राम पोटैशियम और 1.2 किलोग्राम सल्फर के अलावा कार्बनिक पदार्थों की हानि होती है.

इसी तरह पंजाब प्रांत में स्टडी के मुताबिक, पराली जलाने से 100 प्रतिशत कार्बन व 90 फीसदी नाइट्रोजन का ह्रास होता है.

मृदा जीवों पर गलत असर : अवशेषों को बारबार जलाने से मृदा का तापमान काफी बढ़ जाता है, जिस से उस में निवास करने वाले लाभदायक जीव खासकर विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं का नुकसान होने लगता है. भूमि के ऊपरी हिस्से में जीवांश कार्बन और नाइट्रोजन का स्तर कम होने लगता है, जिस से फसलों का विकास अच्छा नहीं होता है. मृदा में जो भी खाद व उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है, वह लाभदायक जीवाणुओं की हालत में ही पोषक

DASMESH PADDY CHOPPER
DASMESH
MALERKOTLA, DISTT. SANGRUR (PUNJAB)
PB13N 9613

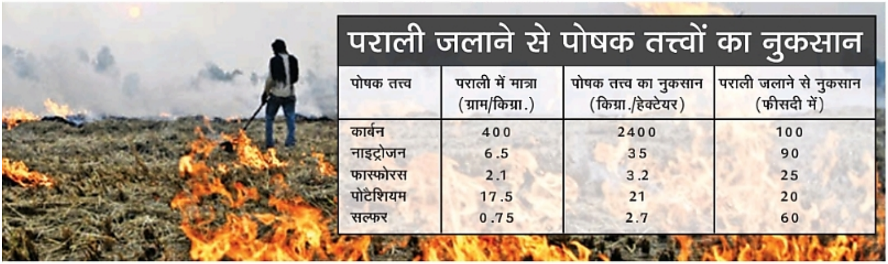

पराली जलाने से पोषक तत्त्वों का नुकसान

पोषक तत्त्व	पराली में मात्रा (ग्राम/किग्रा.)	पोषक तत्त्व का नुकसान (किग्रा./हेक्टेयर)	पराली जलाने से नुकसान (फीसदी में)
कार्बन	400	2400	100
नाइट्रोजन	6.5	35	90
फास्फोरस	2.1	3.2	25
पोटैशियम	17.5	21	20
सल्फर	0.75	2.7	60

तत्त्वों के रूप में पौधों को प्राप्त होता है. इस के अलावा अन्य लाभदायक जीव जैसे राइजोबियम, एजोस्पाइरिलम, ट्राइकोडर्मा और मृदा में रहने वाले केंचुए अधिक तापमान के कारण नष्ट हो जाते हैं.

हानिकारक गैसों का उत्सर्जन : पराली जलाने पर उस में मौजूद कार्बन का 70 फीसदी हिस्सा कार्बनडाईऔक्साइड के रूप में, 7 फीसदी कार्बनमोनोऔक्साइड और 0.66 प्रतिशत हिस्सा मीथेन के रूप में उत्सर्जित होता है. ग्रीन हाउस और अन्य गैसें जैसे सल्फरडाईऔक्साइड, नाइट्रोजन औक्साइड का उत्सर्जन होने से ओजोन परत को नुकसान पहुंच रहा है, जिस से हमारे पर्यावरण को काफी नुकसान हो रहा है.

फसल की कटाई के पश्चात अवशेषों को जलाने से हवा में विषैला रसायन डाईऔक्सिन की मात्रा 33-270 गुना बढ़ जाती है, जिस का प्रभाव वातावरण में अधिक समय तक रहता है और मनुष्य व पशुओं की त्वचा पर जमा हो जाता है, जिस से खतरनाक बीमारियां होती हैं.

इस के अलावा फसल अवशेषों को जलाने से पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है, इस प्रकार फसल अवशेषों का प्रबंधन कर के पशु चारे की कमी को दूर किया जा सकता है और मल्चिंग के द्वारा मृदा की जल धारण क्षमता को बढ़ा कर फसल उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है.

फसल अवशेषों का प्रबंधन

फसल अवशेषों को अंधाधुंध जलाने से मृदा स्वास्थ्य, कार्बनिक पदार्थों की मात्रा, पौधों के गौण एवं सूक्ष्म पोषक तत्त्वों के अलावा मृदा के सूक्ष्म जीवों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, इसलिए उचित फसल अवशेष प्रबंधन की रणनीत पर्यावरण हितैषी और कृषि को बढ़ाने वाली है. संरक्षित जुताईगुड़ाई, मृदा संरक्षण का कार्य, शून्य जुताई व फसल अवशेष मल्चिंग, पशुओं का चारा और कंपोस्ट तैयार करना इत्यादि फसल अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाया जा सकता है.

मृदा के भौतिक गुणों में सुधार : भारी मशीनों जैसे प्लांटर, जीरो टिल, रीपर व कंबाइन हार्वेस्टर के प्रयोग से मृदा सख्त हो जाती है, जिस से मृदा के भौतिक गुणों जैसे अंत:स्पंदन गति, हवा का आवागमन और जल धारण क्षमता पर विपरीत असर पड़ता है. यदि मृदा में दलहनी व अन्य फसलों के अवशेषों को मृदा में मिलाते हैं तो इस से मृदा के भौतिक गुणों में सुधार होता है.

इस के अलावा अवशेषों को मृदा में मिलाने से फसलों की वृद्धि व विकास अच्छा होता है और जड़ क्षेत्र में पोषक तत्त्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है. धान आधारित फसल प्रणाली में फसल अवशेषों का प्रयोग व संरक्षित जुताईगुड़ाई करने से मृदा कणों और कार्बन एकत्रीकरण में सुधार होता है.

रासायनिक गुणों में सुधार : फसल अवशेष प्रबंधन मृदा के रासायनिक गुणों जैसे पीएच, विद्युतीय चालकता, धनायन आदानप्रदान क्षमता व इस के अलावा मुख्य और गौण पोषक तत्त्वों का रूपांतरण इत्यादि में प्रभावी तौर पर सुधार होता है.

मृदा उत्पादकता में सुधार : फसल अवशेषों को मृदा में कुशल प्रबंधन करने से मृदा उत्पादकता एवं पोषक तत्त्व पुनरावर्तन वृद्धि की जा सकती है और केंचुओं की संख्या

में बढ़ोतरी होती है, जिस से मृदा की उर्वराशक्ति में वृद्धि होती है. खरीफ, रबी व जायद की फसलों की कटाई के उपरांत खेत में 20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से/तवे वाले हल से व रोटावेटर से जुताई कर देने से फसल अवशेष 20-25 दिन के अंदर सड़ कर मृदा में मिल जाते हैं, जिस से मृदा में कार्बनिक पदार्थों व अन्य तत्त्वों की बढ़ोतरी होती है.

इस के अलावा संसाधन संरक्षण तकनीकी के अंतर्गत हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मल्चर व चापर का प्रयोग कर के फसल अवशेषों को मृदा में मिला कर मिट्टी की उर्वराशक्ति को बढ़ाया जा सकता है.

किसानों की आय का स्रोत

विभिन्न प्रकार के फसल अवशेषों द्वारा ओएस्टर, दूधिया और बटन मशरूम की खेती कर के एक अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं. फसल अवशेष की गांठों को बायोगैस प्लांट, बायोमास प्लांट अथवा एथेनाल प्लांट में पहुंचा कर प्रति एकड़ 6,000-7,000 रुपए प्राप्त कर सकते हैं.

इस के अलावा फसल अवशेषों के द्वारा बायोचार, जो एक प्रकार का कच्चा कोयला होता है, को बना कर भूमि में प्रयोग करने से उत्पादन में वृद्धि होती है.

जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के कंपोस्ट को बनाने के बाद उस की पैकिंग कर के बेचने से आय प्राप्त कर सकते हैं और आसपास की राइस मिल, गत्ता फैक्टरी, पेपर मिल, कौच व सैनेटरी सामग्री पैकिंग उद्योग व दूसरे जरूरत के सामानों को कारखानों को बेच कर आमदनी बढ़ा सकते हैं. ■

जैविक खेती का महत्त्व

*** डा. अजय कुमार**

हमारे देश में जैविक खाद आधारित खेतीबारी पुराने समय से की जा रही है. आजादी के बाद हरित क्रांति के दौर में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का तेजी से इस्तेमाल हुआ, जिस के बाद खाद्य उत्पादन में वृद्धि हुई, परंतु अधिक मात्रा में रासायनिक खादों के इस्तेमाल से वातावरण दूषित हुआ, जिस से मानव जीवन प्रभावित हुआ.

जैविक खेती करने के लिए किसान निम्नलिखित तकनीक को इस्तेमाल में ला सकते हैं:

☛ मृदा संरक्षण के लिए पलवार प्रयोग.

☛ मिट्टी में पोषक तत्त्व संतुलन के लिए दलहनी फसलों की एकल, मिश्रित और अंतरासस्यन.

☛ मिट्टी में कृषि अवशेष, वर्मी कंपोस्ट, जीवाणु खाद और बायोडायनामिक कंपोस्ट का प्रयोग.

☛ खेती में जैविक उर्वरकों के प्रयोग का महत्त्व है, जिस में राईजोबियम, एजोटोबैक्टर, पीएसबी और बीजीए प्रमुख हैं. जैविक उर्वरकों के प्रयोग का मुख्य आकर्षण है उन के उत्पादन और उपयोग की सफलता व न्यूनतम लागत.

☛ पौध सुरक्षा के लिए खरपतवार की सफाई और जैविक कीटनाशियों का प्रयोग.

☛ फसल चक्र, हरित खाद, भूपरिष्करण और खाद प्रबंधन द्वारा फसलों में खरपतवार प्रबंधन.

☛ जैविक खेती करने वाले किसान अपनी फसलों में पोषक तत्त्व और कीट व रोग प्रबंधन करते हैं.

☛ पोषक तत्त्व प्रबंधन के लए देश के विभिन्न भागों में इस्तेमाल देशी तकनीक.

☛ देश के विभिन्न भागों में मिट्टी में पोषक तत्त्व प्रबंधन हेतु किसानों द्वारा अपनाई जा रही तकनीकियों का अवलोकन करें, तो पता चलता है कि देश के अधिकतर हिस्सों में किसान स्थानीय रूप से उपलब्ध पोषक तत्त्वों के जैविक स्त्रोतों का ही प्रयोग करते हैं.

☛ ऐसे स्थानीय खाद, जीवांश अथवा जैविक अवशिष्ट का प्रयोग किसानों के एक लंबे प्रयोग का परिणाम है.

☛ ये कृषि क्रियाएं क्षेत्र विशेष के किसानों की सामाजिक परंपराओं और मान्यताओं को भी अहमियत देती हैं. ■

ग्लोइंग स्किन के लिए प्राकृतिक नुस्ख़ा

आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।

New Dr. Juneja's Roop Mantra®

Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash

Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash

• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com

शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित

खेती में जल प्रबंधन के उपाय

* पल्लवी यादव, डा. ओम प्रकाश, डा. ब्रह्म प्रकाश एवं डा. कामिनी सिंह

पिछले अंक में आप ने पढ़ा : खेतीबारी में जल की जरूरत किसी से छिपी नहीं है. इस के बहुत सारे स्रोत हैं, जो किसान इस्तेमाल करते हैं. लिहाजा, खेती में जल प्रबंधन की उपयोगिता बढ़ जाती है. इस से व्यवस्थित रूप से सिंचाई की जाती है.

गेहूं की फसल में जल प्रबंधन

☛ प्राय: बौने गेहूं से ज्यादा से ज्यादा उपज लेने के लिए हलकी भूमि में पहली सिंचाई क्राउन रूट बोआई के 22 दिन से 25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था), दूसरी सिंचाई बोआई के 40 दिन से 45 दिन बाद कल्ले निकालने की अवस्था पर, तीसरी सिंचाई बोआई के 60 दिन से 65 दिन पर दीर्घ संधि या गांठें बनते समय, चौथी सिंचाई बोआई के 80 दिन से 85 दिनों पर फूल आने की अवस्था (पुष्पावस्था) में, 5वीं सिंचाई बोआई के 100 दिन से 105 दिनों पर बालियों में दूध जैसा पदार्थ बनने की अवस्था (दुग्धावस्था) में और छठी व अंतिम सिंचाई बोआई के 115 दिन से 120 दिनों पर बाली में दाना बनते समय करने से जल की बचत के साथसाथ भरपूर उपज भी प्राप्त होती है.

☛ गन्ने के साथ गेहूं की फसल लेने के लिए फर्ब विधि से गेहूं व गन्ने की बोआई करनी चाहिए. इस तरीके को अपनाने से पानी की

बचत के साथसाथ दोनों फसलों की पैदावार भी ज्यादा मिलती है.

फर्ब विधि से गेहूं और गन्ने की बोआई कृषि जल संरक्षण का किफायती व उपयोगी तरीका है. इस तरीके में औसतन 20 से 30 फीसदी सिंचाई के पानी की बचत की जा सकती है. फर्ब विधि से गेहूं और गन्ने की बोआई के कई फायदे हैं :

☛ खास अवस्था में गेहूं में यदि केवल 3 सिंचाई ही कर पा रहे हैं, तो ये सिंचाइयां ताजमूल अवस्था, बाली निकलने के पहले और दुग्धावस्था पर ही करने से गेहूं की भरपूर उपज मिलती है.

☛ 2 सिंचाइयां उपलब्ध होने पर ताजमूल व पुष्पावस्था पर सिंचाई करने से ही फायदेमंद रहता है.

☛ इसी तरह केवल एक सिंचाई उपलब्ध होने पर ताजमूल की क्रांतिक अवस्था पर ही सिंचाई करनी चाहिए.

गन्ना की फसल में जल प्रबंधन

☛ गोल गड्ढा बोआई विधि अपना कर सिंचाई जल की औसतन 30 से 40 फीसदी बचत की जा सकती है. जल बचत के अलावा जल उपयोग क्षमता में 30 से 40 फीसदी और पोषक तत्त्व उपयोग क्षमता में 30 से 35 फीसदी तक बढ़ती है व गन्ने की उपज भी डेढ़ से 2 गुना ज्यादा प्राप्त होती है.

☛ गन्ने में एकांतर नाली सिंचाई विधि अपनाने से औसतन 30 से 40 फीसदी सिंचाई जल की बचत होती है और जल उपयोग क्षमता में 60 से 65 फीसदी तक की बढ़ोतरी हो जाती है.

☛ एकांतर नाली सिंचाई विधि अपनाने से फसल में खरपतवारनाशी रसायनों का उपयोग कम से कम करना पड़ता है, इसलिए इन के छिड़काव के लिए घोल बनाने के लिए पानी की भी जरूरत कम होने से पानी की बचत होती है. साथ ही, गन्ने की पैदावार भी ज्यादा मिलती है.

☛ गन्ने की कटाई के बाद सूखी पत्तियों को पेड़ी गन्ने की नालियों के बीच में 6 से 8 सैंटीमीटर मोटी परत में बिछाने से औसतन 40 फीसदी सिंचाई जल की बचत की जा सकती है. इस के साथ ही साथ इस से मिट्टी में नमी संरक्षण के साथसाथ वाष्पोत्सर्जन भी कम होता है व मिट्टी की पैदावार की ताकत भी बढ़ती है.

☛ गन्ने की बोआई नाली विधि से करने के बाद नालियों को पाटा लगा कर बंद करने से मिट्टी की नमी संरक्षण में मददगार साबित होती है.

☛ गन्ने की बढ़वार की 4 अवस्थाओं के अनुसार सिंचाई (कुल 10) करने पर सिंचाई के पानी की औसतन 30-35 फीसदी बचत के साथ ही साथ जल उपयोग क्षमता 35-40 फीसदी बढ़ जाती है.

☛ सिंचाई के पानी की बचत के लिए गन्ने की सहफसली खेती को वरीयता देना चाहिए. इस पद्धति से गन्ने की खेती में सिंचाई के पानी की काफी बचत की जा सकती है.

☛ फर्ब विधि से गेहूं और गन्ने की बोआई कृषि जल संरक्षण का किफायती व उपयोगी तरीका है. इस विधि में औसतन 20 से 30 फीसदी सिंचाई के पानी की बचत की जा सकती है.

(अगले अंक में जारी)

दिल्ली प्रैस
सरिता
विश्वसनीय, निर्भीक, सुखद, सदा युवा पत्रिका
सुखसमृद्धि किस्मत से नहीं, परिश्रम से मिलती है भाग्य मूर्खों की गलतफहमी है
पाक्षिक पत्रिका
भाग्य व धर्मकर्म के चक्रव्यूह से बाहर निकाले, दिखाए समृद्धि के द्वार सरिता
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

बकरीपालन मोबाइल एप

* भानु प्रकाश राणा

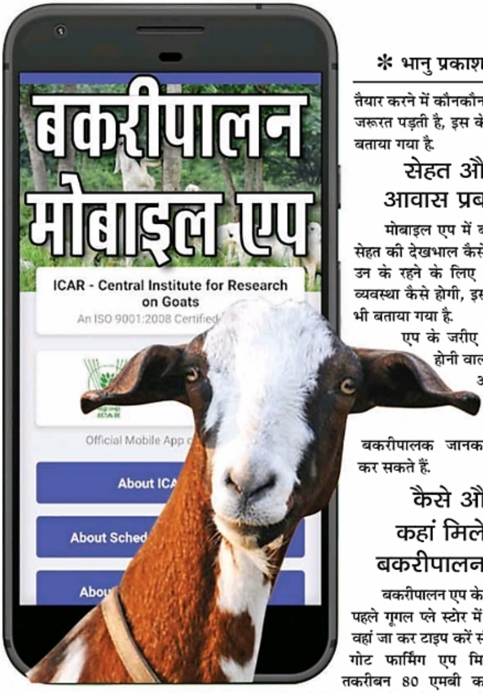
ICAR - Central Institute for Research on Goats
An ISO 9001:2008 Certified
Official Mobile App
About ICA
About Sched
Abou

बकरीपालन ऐसा व्यवसाय है, जिस में नुकसान होने की आशंका बहुत कम रहती है. किसान दूसरे कृषि कामों के साथ भी बकरीपालन शुरू कर सकते हैं.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तहत केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने एक ऐसा मोबाइल एप बनाया है, जहां किसानों को बकरीपालन से जुड़ी नस्लों, योजनाओं सहित पूरी जानकारी मिलती है.

बकरीपालन को किसानों की आय बढ़ाने का मुख्य स्रोत कहा जाता है, क्योंकि इसे शुरू करने में बहुत ज्यादा खर्च की जरूरत नहीं पड़ती. सरकार और वैज्ञानिक इस दिशा में लगातार काम भी कर रहे हैं.

इसी दिशा में केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान यानी सीआईआरजी ने बकरीपालन एप बनाया है. बकरीपालन की शुरुआत के लिए ये मोबाइल बहुत ही कारगर साबित हो सकता है.

इस मोबइल एप में भारतीय बकरी की नस्लों के बारे में काफी जानकारी दी गई है. साथ ही, यह भी बताया गया है कि आप अगर मांस के लिए ही बकरीपालन करना चाहते हैं, तो किन किस्मों का चुनाव करेंगे या रेशे और दूध के लिए कौन सी नस्लें बेहतर होंगी.

कृषि उपकरण और चारा उत्पादन

बकरीपालन में किनकिन कृषि उपकरणों की जरूरत पड़ती है या चारा उत्पादन कैसे करेंगे, बकरीपालन मोबाइल एप में इस की भी जानकारी दी गई है. चारा उत्पादन और खेत तैयार करने में कौनकौन से यंत्रों की जरूरत पड़ती है, इस के बारे में भी बताया गया है.

सेहत और आवास प्रबंधन

मोबाइल एप में बकरियों की सेहत की देखभाल कैसे करेंगे और उन के रहने के लिए आवास की व्यवस्था कैसे होगी, इस के बारे में भी बताया गया है.

एप के जरीए बकरियों में होनी वाली बीमारियों और उन की रोकथाम के बारे में बकरीपालक जानकारी हासिल कर सकते हैं.

कैसे और कहां मिलेगा बकरीपालन एप

बकरीपालन एप के लिए सब से पहले गूगल प्ले स्टोर में जाना होगा. वहां जा कर टाइप करें सीआईआरजी गोट फार्मिंग एप मिल जाएगा. तकरीबन 80 एमबी का ये हिंदी, अंगरेजी, तमिल व तेलुगु में उपलब्ध है. एप खोलते ही भाषा को चुनने का विकल्प आता है. ■

बकरीपालन सीखने के लिए प्रशिक्षण

बकरीपालन कम लागत में बढ़िया मुनाफा देता है. इसे बढ़ाने के लिए केंद्र और प्रदेश सरकारें अपनेअपने लैवल पर कई योजनाएं भी चलाती हैं. जानकारों का कहना है कि बकरीपालन प्रशिक्षण लेने के बाद ही शुरू करना चाहिए.

प्रशिक्षण आप केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा, उत्तर प्रदेश से ले सकते हैं. यह संस्थान बकरीपालन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को ट्रेंड करता है.

केन्द्रीय बकरी अनुसन्धान संस्थान
CENTRAL INSTITUTE FOR RESEARCH ON GOAT
(An ISO 9001:2008 Certified Institute)
ICAR

राष्ट्रीय प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य बकरीपालकों को जागरूक करना और उन्हें नई तकनीक के बारे में बताना है. प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिक तरीके से बकरीपालन के बारे में भी बताया जाता है.

प्रशिक्षण लेने वाला व्यक्ति भारत का नागरिक होना जरूरी है. प्रशिक्षण 7 दिवसीय होता है. पंजीकरण शुल्क 5,500 रुपए है.

संस्थान में रुकने के लिए 50 रुपए प्रतिदिन देना होगा. खाने का खर्चा प्रतिदिन 200 रुपए देना होगा. प्रशिक्षणार्थी अपने रहने व भोजन की व्यवस्था संस्थान से बाहर भी कर सकते हैं.

वैबसाइट www.cirg.res.in पर प्रशिक्षण की तिथि प्रसारित हो जाने की दशा में ही आप प्रशिक्षण के लिए आवेदन कर सकते हैं, अन्यथा आवेदनपत्र स्वीकार नहीं किए जाते हैं.

अधिक जानकारी के लिए दिए गए हैल्पलाइन नंबर 0565-2970999, 09682143097 पर संपर्क कर सकते हैं.

इस प्रशिक्षण में पशुपालकों को बकरियों को खरीदने से ले कर आवास प्रबंधन, आहार व्यवस्था, बीमारियों और उन को बेचने की पूरी जानकारी समझाई जाती है.

कैसे करें आवेदन

बकरीपालन प्रशिक्षण के लिए केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान की वैबसाइट www.cirg.res.in है. इस वैबसाइट पर आप को अधिक जानकारी मिल जाएगी.

केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान का पता है : निदेशक, केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मकदूम, फरह, मथुरा (उत्तर प्रदेश) - 221166 ■

पोषक अनाज हितधारक सम्मेलन :

पोषक अनाज की पहुंच देश के प्रत्येक नागरिक तक हो

–नरेंद्र सिंह तोमर, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री

हैदराबाद : केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 17 सितंबर, 2021 को पोषण केंद्र (न्यूट्री-हब), भाकृअनुप-भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के द्वारा खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ), कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और नीति आयोग के संयुक्त तत्त्वावधान में एचआईसीसी, हैदराबाद में आयोजित 2 दिवसीय 'पोषक अनाज हितधारक सम्मेलन' का शुभारंभ किया.

कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि कृषि क्षेत्र के अंतरालों को भरने के लिए पैकेजों के रूप में डेढ़ लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि के प्रावधान का जिक्र किया. साथ ही, उन्होंने किसान उत्पादक संगठनों के संबंध में भी उठाए जा रहे कदमों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इन के माध्यम से छोटे व मझोले किसान किस तरह से फायदा ले सकते हैं.

उन्होंने कहा कि पोषक अनाज हितधारकों का यह सम्मेलन कदन्न के महत्त्व, इस के उत्पादन, प्रसंस्करण और व्यावसायीकरण के लिए मददगार साबित होगा.

उन्होंने यह भी कहा कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र के समक्ष कुपोषण से मुक्ति की बात रखते हुए पोषक अनाजों के संबंध में जागरूकता की चर्चा की. नतीजतन, संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक-अनाज वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की.

इस मौके पर कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 'अनुसंधान सुविधाओं', 'पोषक-अनाज बीज विज्ञान केंद्र', पोषण केंद्र (न्यूट्री-हब) की 'पोषक-अनाज नवोद्यम प्रदर्शनी', 'नवोद्यम/स्टार्टअप सुविधाएं: कदन्न खाद्य प्रसंस्करण एककों' व 'पोहाकरण श्रृंखला' और इफको की 'पोषण वाटिका' का उद्घाटन व पौधारोपण किया.

उन्होंने संस्थान की खाद्य प्रसंस्करण सुविधाओं, व्यवसाय उष्मायन केंद्र व पोषण केंद्र का निरीक्षण और प्रक्षेत्र भ्रमण किया.

अतिथि, कैलाश चौधरी, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री ने पोषक अनाजों के महत्त्व पर रोशनी डालते हुए कहा कि इन अनाजों के सेवन से सेहत अच्छी रहती है, इसलिए हमें इन अनाजों को फिर से अपने भोजन में लाना होगा. साथ ही, कुपोषण की समस्याओं से नजात पाने के लिए सरकार और जनता को एकसाथ मिल कर काम करना होगा.

शोभा करंदलाजे, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भी इस मौके पर बतौर सम्मानित अतिथि मौजूद रहीं.

संजय अग्रवाल, सचिव, कृषि, ने कहा कि पोषक अनाजों के क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल व उस को बढ़ावा देना केंद्र सरकार का प्रमुख उद्देश्य रहा है.

डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग एवं महानिदेशक, भाकृअनुप ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत करते हुए पोषण सम्मेलन के संबंध में संक्षिप्त जानकारी साझा की. उन्होंने कहा कि पोषक अनाज हितधारकों का यह सम्मेलन पोषण अनाजों से संबंधित चुनौतियों के समाधान के लिए एक दिशानिर्देश तैयार करने में अहम भूमिका निभाएगा.

उन्होंने यह भी जानकारी दी कि पोषण वाटिका को बढ़ावा देने के लिए केवीके के माध्यम से किसानों को बीज मुहैया कराया जाएगा.

डा. शेखर सी. मांडे, सचिव, डीएसआईआर और महानिदेशक, सीएसआईआर ने उद्घाटन टिप्पणी के दौरान पोषक अनाज के महत्त्व को बताते हुए सीएसआरआर व आईसीएआर के संयुक्त कामों पर प्रकाश डाला.

डा. एसके मल्होत्रा, कृषि आयुक्त, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने स्थितिपत्र पर प्रतिपुष्टि व अं.पो.अ.व. 2023 पर चर्चा की और उक्त आयोजन के लिए अपेक्षित संपूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि सरकार 18 विभिन्न मंत्रालयों को शामिल करते हुए इस आयोजन को विशाल बनाने व पोषक अनाज के लिए भारत ही नहीं, अपितु पूरी दुनिया में जागरूकता लाने के लिए प्रयासरत है.

डा. तिलक राज शर्मा, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप ने अपने स्वागत संबोधन से उद्घाटन सत्र की शुरुआत की.

डा. विलास ए. टोणपि, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया. ■

धान बेचने से पहले रजिस्ट्रेशन जरूरी

लखनऊ : किसानों को अपना धान बेचने से पहले रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य होगा, ताकि उन की जमीन, बोए गए धान व बैंक एकाउंट का सत्यापन समय पर किया जा सके. इस से उन्हें खरीद केंद्रों पर दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ेगा.

धान बेचने के 72 घंटे के अंदर उन के खाते में धान का मूल्य पीएफएमएस के माध्यम से मिल सकेगा.

यह रजिस्ट्रेशन किसान द्वारा खुद कर सकेंगे या फिर जनसूचना केंद्र के माध्यम से या साइबर कैफे के माध्यम से कराया जा सकेगा.

किसानों का रजिस्ट्रेशन, उन की आधार संख्या व रजिस्ट्रेशन के समय किसान के आधार लिंक मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेज कर किया जाएगा.

धान बिक्री के समय खरीद केंद्रों पर किसान यदि स्वयं नहीं आएगा तो उसे रजिस्ट्रेशन के समय ही अपने परिवार के सदस्य का विवरण व आधार नंबर फीड करना अनिवार्य होगा. ■

वैज्ञानिक सलाहकार समिति में कृषि के लिए सुझाव

अयोध्या : 18 सितंबर, 2021 को प्रो. एपी राव, निदेशक प्रसार, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या की अध्यक्षता और डा. राघवेंद्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर की उपस्थिति में जिले के कृषिगत अधिकारियों के द्वारा केंद्र व किसानों के लिए महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए गए.

जिला कृषि अधिकारी मनीष कुमार सिंह ने जैव रसायन, नैनी यूरिया पर ट्रायल करने का सुझाव दिया, वहीं प्रतिनिधि संयुक्त निदेशक उद्यान ने ड्रैगन फ्रूट को तैयार करने का सुझाव दिया,

भूमि संरक्षण अधिकारी सुधाकर कुमार चक्रवर्ती ने जनपद में काला नमक धान के बीज उत्पादन पर बल दिया और गेहूं की उन्नतशील प्रजातियां जैसे डीबीडब्ल्यू- 222, डीबीडब्ल्यू-303 और देर से बोई जाने वाली गेहूं की प्रजातियां डीबीडब्ल्यू-107 को केंद्र पर उत्पादित करने का सुझाव दिया.

जिला कृषि अधिकारी द्वारा खरीफ में मूंगफली की खेती के लिए उपयुक्त प्रजाति का बीज उत्पादन कर केंद्र पर किसानों को मुहैया कराएं.

प्रतिनिधि जिला उद्यान अधिकारी द्वारा पूसा, नई दिल्ली द्वारा विकसित आम की रंगीन प्रजातियां पूसा सूर्या, अरुनिका, पूसा पीतांबर का पौध तैयार करने का सुझाव दिया गया.

पशु चिकित्सा अधिकारी डा. एके राय ने हरा चारा उत्पादित करने के लिए हाईब्रिड नेपियर बाजरा का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया.

सहायक अभियंता सिंचाई ने दलहनी व तिलहनी फसलों की उन्नतशील प्रजातियों के बीज उत्पादित कर किसानों को मुहैया कराने पर बल दिया.

प्रगतिशील किसान आज्ञा राम वर्मा ने कश्मीरी सेब और हनीमैन 99 को तैयार कर किसानों को उपलब्ध कराने पर बल दिया.

माननीय सदस्य और प्रगतिशील किसान दिनेश प्रताप सिंह ने गुड़ प्रसंस्करण को बढ़ावा देने व जनपद के प्रगतिशील किसानों को प्रशिक्षण प्रदान कर नई इकाइयों को स्थापित करने के लिए प्रबंधक, नाबार्ड एवं जिला उद्योग केंद्र को सहयोग करने को कहा.

प्रगतिशील किसान अरविंद पाल ने जैविक खेती पर प्रशिक्षण दिए जाने का सुझाव दिया. अरविंद सिंह प्रधान और अरविंद पाल ने मत्स्यपालन के साथ डेरी उद्योग व कुक्कुटपालन को बढ़ावा देने पर बल दिया.

निदेशक प्रसार प्रो. एपी राव ने उम्मीद जताई कि प्राप्त सुझावों का अनुपालन केंद्र के वैज्ञानिक तय करें.

प्रधान वैज्ञानिक डा. राघवेंद्र सिंह ने फलों के बाग में औषधीय पौधों की खेती और नवीनतम प्रजातियों की पौध रोपण करने का सुझाव दिया.

किसान महिला निशि गुप्ता ने कुटीर उद्योग प्रशिक्षण दिए जाने पर बल दिया, वहीं अंजनी सिंह ने दुग्ध उत्पाद तैयार करने पर बल दिया.

केंद्राध्यक्ष प्राध्यापक डा. एसएन सिंह ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए उन के द्वारा प्राप्त सुझावों का अनुपालन कराने पर बल दिया.

केंद्र के वैज्ञानिक डा. डीके श्रीवास्तव ने बकरी की ब्लैक बंगाल और कड़कनाथपालन को बढ़ावा देने की बात कही.

वीना सचान ने कृषिगत महिलाओं के स्वावलंबन के लिए एक पोषण वाटिका लगाने पर बल दिया. डा. प्रेम शंकर ने मशरूम उत्पादन को बढ़ावा देने के बारे में जानकारी प्रदान की.

डा. आरबी सिंह ने काला नमक धान, मूंगफली, सरसों, गेहूं की उन्नत प्रजातियों के बीज का उत्पादन कर किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा. वहीं दूसरी ओर राममूर्ति मिश्र ने कहा कि अगेती अरहर की प्रजातियों का बीज केंद्र द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा. इस बैठक में जनपदस्तरीय अधिकारी, कर्मचारी आदि उपस्थित थे. ■

ट्रेनिंग में किसानों को दिए जैविक खेती के टिप्स

बस्ती : जिले में जैविक खेती के विस्तार के लिए बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन और कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार के 'ट्रांसफार्म एग्रीकल्चर इकोसिस्टम' कार्यक्रम के तहत कृषि विज्ञान केंद्र, बंजरिया, बस्ती में काला नामक धान और अन्य फसलों में जैवजैविक आदानों पर एक प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया.

इस मौके पर वैज्ञानिक प्रसार राघवेंद्र विक्रम सिंह ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र की निगरानी में तकरीबन 5,000 बीघा क्षेत्र में काला नमक धान की खेती जनपद में की गई है, जिस में पायलट प्रोजैक्ट के तहत 25 एकड़ क्षेत्र में बीएमजीएफ समर्थित टीएसयू द्वारा बोमलाइफ के साथ मिल कर सिद्धार्थ फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड से जुड़े किसानों द्वारा बस्ती जिले में काला नमक धान की जैविक खेती की जा रही है.

इस मौके पर बोमलाइफ बायोऔर्गेनिक सौल्यूशन के संस्थापक अमलन दत्ता ने किसानों को जैविक खेती के फायदे भी गिनाए. उन्होंने बताया कि बस्ती जिले में सिद्धार्थ एफपीओ से जुड़े किसानों को जैविक खेती के जरीए आय में इजाफा किए जाने के लिए बोमलाइफ, इंडिया एग्रीटेक इनोवेशन, बीएमजीएफ और टाटा ट्रस्ट द्वारा आईआईटी, कानपुर के साथ साझेदारी में बस्ती को हाईटेक और्गेनिक ऐक्सपीरियंस सैंटर के रूप में चुना गया है.

इस मौके पर लखनऊ से उत्तर प्रदेश राज्य जैविक प्रमाणन एजेंसी के प्रतिनिधि अंजनी सिंह ने जैविक खेती करने वाले किसानों को जैविक प्रमाणन प्रक्रिया पर विस्तृत जानकारी देते हुए आवेदन प्रक्रिया को समझाया.

कार्यक्रम में केवीके, बस्ती के विशेषज्ञ फसल सुरक्षा डा. प्रेमशंकर ने किसानों को जैविक तरीके से कीट और बीमारियों के नियंत्रण की जानकारी दी, वहीं उद्यान विभाग में निरीक्षक राम विनोद मौर्या ने विभाग की अनुदान योजनाओं पर जानकारी दी.

सिद्धार्थ एफपीसी के निदेशक राममूर्ति मिश्र, आज्ञा राम वर्मा, राजेंद्र सिंह, बृहस्पति कुमार पांडेय, योगेंद्र सिंह, विजेंद्र बहादुर पाल ने किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी.

इस मौके पर बीएमजीएफ और कृषि विभाग, लखनऊ की टीएसयू टीम ने स्टार्टअप टैन 90 थर्मल सौल्यूशंस द्वारा तैयार बेहद सस्ते और सहज एक पोर्टेबल कोल्ड स्टोरेज उपकरण का प्रदर्शन किया, जिस में उन्होंने बताया कि बिना किसी खर्च के छोटे किसान अपनी सब्जियों, दूध उत्पाद, मशरूम आदि को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रमुख रूप से धर्मेंद्र कुमार पांडेय, मनिव्रतो पाल, जेपी शुक्ल, अरविंद पाल, अमित विक्रम त्रिपाठी, कात्यायन शुक्ल, अरविंद सिंह, अहमद अली, राघवेंद्र बहादुर पाल, प्रेम प्रकाश उपाध्याय, अमरेश पांडेय, राजवंत यादव, रीता पांडेय, अवधेश पांडेय सहित 85 किसान मौजूद रहे. ■

जानकारी

पोषण वाटिका और वृक्षारोपण कार्यक्रम

बलिया : पिछले दिनों 17 सितंबर, 2021 को सजीव प्रसारण कृषि विज्ञान केंद्र, सोहांव, बलिया द्वारा दिखाया गया. इस में पोषक अनाज को बढ़ावा देने के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है. केंद्र सरकार द्वारा पहले से ही पोषक अनाज संबंधी योजनाएं व कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं. प्रसारण के बाद केंद्र द्वारा पोषण वाटिका पर गोष्ठी का आयोजन किया गया.

केंद्र के अध्यक्ष प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने पोषण वाटिका में जैविक कीट व रोग प्रबंधन पर प्रकाश डाला, जबकि जिला उद्यान अधिकारी नेपाल राम ने पोषण वाटिका स्थापित करने की तकनीकी जानकारी दी.

डा. प्रेमलता श्रीवास्तव (गृह विज्ञान) ने सब्जियों के महत्त्व को बताया और डा. सोमेंद्र नाथ, शस्य वैज्ञानिक ने पोषक अनाज जैसे मक्का, बाजरा, सावा, कोदो, मडुवा, चेना, आदि के उत्पादन एवं उपयोग पर जानकारी दी. जबकि डा. मनोज कुमार, पादप प्रजनन वैज्ञानिक ने फोर्टिफाइड बीज की जानकारी दी.

इफको के अनुज कुमार शुक्ला ने मोटे अनाज पर प्रकाश डाला और इफको की तरफ से पोषण वाटिका के लिए सब्जियों के पैकेट व सहजन के पौधे वितरण किए गए.

सभी आगंतुकों को धर्मेंद्र कुमार, प्रक्षेत्र प्रबंधक ने केंद्र पर लगी जैविक हलदी, अरहर व धान की फसल का अवलोकन करा कर तकनीकी जानकारी दी गई. इस के अलावा केंद्र परिसर में पौध रोपण भी किया गया. इस कार्यक्रम में तकरीबन 80 कन्याओं, किसानों और किसान महिलाओं ने हिस्सा लिया. ■

ट्रेनिंग

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण

बलिया : कृषि विज्ञान केंद्र, सोहांव, बलिया में मशरूम उत्पादन उद्यमिता विकास पर आयोजित पांचदिवसीय प्रशिक्षण हुआ. इस दौरान औनलाइन केवीके, बाराबंकी के विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादप रक्षा) डा. संदीप कुमार ने

प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम के उत्पाद व उन से लाभ और प्राप्त होने वाले पोषक तत्त्वों के बारे में जानकारी दी.

केंद्र के अध्यक्ष प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने ओएस्टर मशरूम तैयार करने की विधि बतलाई. साथ ही, मशरूम में लगने वाले रोग और उन की रोकथाम पर चर्चा की.

उन्होंने बताया कि 20 फुट लंबा, 15 फुट चौड़ा और 10 फुट ऊंचाई वाले कमरे में ओएस्टर मशरूम का →

हर घर पोषण वाटिका स्थापित हो – दयाराम चौधरी

बस्ती : आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती पर 'भारत का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के परिपेक्ष्य में पोषण वाटिका महाअभियान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन पिछले दिनों इफ्को, बस्ती के सहयोग से कृषि विज्ञान केंद्र, बंजरिया फार्म में आयोजित किया गया, जिस का उद्‌घाटन दयाराम चौधरी, विधायक सदर, बस्ती द्वारा किया गया.

उन्होंने किसानों और किसान महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारत सरकार व प्रदेश सरकार किसानों के हित में अनेक लाभकारी योजनाएं चला रही है. इसी क्रम में मोटे अनाज में पोषक तत्त्वों की प्रचुरता को देखते हुए मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है. महिलाओं व बच्चों में कुपोषण की समस्या के समाधान के लिए घरघर पोषण वाटिका स्थापित करने के लिए प्रेरित किया जाएगा.

केंद्र के अध्यक्ष प्रोफैसर डा. एसएन सिंह ने बताया कि जनपद में मोटे अनाजों के उत्पादन को बढ़ाने के मकसद से केंद्र पर सांवा, कोदो, मडुआ का बीज उत्पादन किया जा रहा है, जिसे भविष्य में उपलब्ध कराया जाएगा और किसानों को प्रशिक्षित भी किया जाएगा.

उन्होंने कहा कि महिलाओं और किसानों को अपने घर के आसपास खाली जगह में पोषण वाटिका स्थापित करनी चाहिए.

केंद्र पर तैयार हो रही मूंगफली की फसल पर उन्होंने बताया कि केंद्र पर बोई गई मूंगफली से साल में 2 फसल ले सकते हैं.

उन्होंने आगे बताया कि मूंगफली की किस्म की साल में 2 बार फरवरीमार्च व जूनजुलाई महीने में बोआई होती है. इसे केंद्र से विक्रय किया जाएगा. इस समय केंद्र पर आम की सन्सेसन, पूसा अरुणिमा, पूसा सूर्या, पूसा अरुनिका एवं परवल आदि के पौधे बेची जा रहे है.

इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सत्येंद्र सिंह भोलू प्रदेश कार्यसमिति सदस्य किसान मोरचा, उत्तर प्रदेश ने अपने संबोधन में कहा कि सरकार ने फसलों का समर्थन मूल्य बढ़ा दिया है. इस से किसानों को उन की फसलों का उचित दाम मिल सके.

उपकृषि निदेशक अनिल कुमार ने कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि सरकार द्वारा कृषि यंत्र, वर्मी कंपोस्ट यूनिट सहित विभाग की अनुदान योजनाओं का लाभ लेने के लिए किसान अपना पंजीकरण करा कर लाभ उठा सकते हैं.

उपायुक्त एवं निबंधन सहकारिता अशोक कुमार ने विभाग द्वारा संचालित योजनाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि किसानों की आय दोगुनी तभी हो सकती है, जब वे फसल उत्पादन, पशुपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खीपालन व फलसब्जी उत्पादन करें.

इस कार्यक्रम में उपक्षेत्र प्रबंधक जियाउद्‌दीन सिद्‌दीकी, सतीश कुमार, प्रबंधक, इफ्को, कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती की वैज्ञानिक वीना सचान और वैज्ञानिक डा. डीके श्रीवास्तव, डा. प्रेम शंकर, आरवी सिंह सहित मौजूद विशेषज्ञों ने पोषण वाटिका से जुड़ी जानकारी दी.

इस मौके पर प्रगतिशील किसान आज्ञा राम वर्मा, विजेंद्र बहादुर पाल, परमानंद सिंह, राममूर्ति मिश्र और सिद्धार्थ फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के निदेशक बृहस्पति कुमार पांडेय सहित सैकड़ों महिला किसान मौजूद रहीं.

कार्यक्रम के दौरान किसान कल्याण मंत्रालय एवं भारतीय कृषि अनुसंधान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित लाइव कार्यक्रम मौजूद लोगों को दिखाया गया. ■

उत्पादन अच्छी तरह से किया जा सकता है.

कृषि विज्ञान केंद्र, बक्सर, बिहार के वैज्ञानिक डा. राम केवल ने बटन मशरूम पर जानकारी देते हुए बताया कि इस के लिए कंपोस्ट तैयार करने में एक महीने का समय लगता है. स्पान को छोड़ कर सभी संसाधन स्थानीय बाजार में मिल जाते हैं.

डा. प्रेम लता श्रीवास्तव, गृह विज्ञान ने मूल्य संवर्धन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मशरूम की सब्जी, सूप, अचार, पापड़ आदि आसानी से बनाया जा सकता है.

प्रशिक्षण समन्वयक डा. सोमेंद्र नाथ, शस्य वैज्ञानिक ने मशरूमघर की जानकारी दी. डा. मनोज कुमार ने स्पान तैयार करने की विधि बताई. हरिशंकर वर्मा ने स्वरोजगार के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की.

जिला उद्यान अधिकारी नेपाल राम ने मशरूम से संबंधित योजनाओं पर चर्चा करते हुए बताया कि तकरीबन 20 लाख रुपए की लागत में 40 फीसदी की छूट मिलती है.

ग्राम रामगढ़ ब्लौक गड़वार के मशरूम उत्पादक टुनटुन यादव ने विगत 5 सालों से कर रहे मशरूम की खेती का अनुभव साझा किया और प्रशिक्षणार्थियों के सवालों का जवाब दिया.

केवीके, गाजीपुर-2 के वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष डा. राजेश चंद्र वर्मा ने मशरूम उत्पादन में आने वाले विभिन्न पहलुओं पर बहुत बारीकी से प्रकाश डाला. वहीं के वैज्ञानिक शस्य डा. जय प्रकाश सिंह ने भी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया.

प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रक्षेत्र प्रबंधक धर्मेंद्र कुमार ने केंद्र परिसर में लगी जैविक हलदी की प्रजाति नरेंद्र हलदी-1, धान की स्वर्णा शक्ति, अरहर आरपीए-203, आंवला और अमरूद के बागों का भ्रमण करा कर तकनीकी जानकारी दी गई.

प्रशिक्षण में जनपद के विभिन्न विकास खंडों के 28 किसान, किसान महिलाओं व नवयुवकों ने हिस्सा लिया. ■

भानु प्रकाश राणा, अक्षय कुलश्रेष्ठ

मशीन से फलसब्जियों की बीमारी की जानकारी

सोलन : उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी ने इस के लिए 2.63 करोड़ रुपए से जरमनी की अल्ट्रामाइक्रोटाम टैस्टिंग मशीन लगाई है. प्रदेश में इस तरह की यह पहली अत्याधुनिक मशीन है. फलफूल, सब्जियां व अन्य पौध के अलावा मक्का और गेहूं की फसलों में लगने वाली बीमारियों का यह मशीन एक घंटे में पता लगा लेगी. इस से किसानों के साथसाथ बागबान भी अपने उत्पादों का खराब होने से पहले उपचार कर पाएंगे.

प्रदेश में किसान विभिन्न फलसब्जियां उगाते हैं. आधुनिक तकनीक की कमी में पहले फलसब्जियों की बीमारी की कई दिनों के बाद जांच रिपोर्ट आती थी. इस से किसानों व बागबानों को भारी नुकसान होता था. इस समस्या से निबटने के लिए विश्व बैंक पोषित हिमाचल प्रदेश बागबानी विकास परियोजना के तहत नौणी विश्वविद्यालय में अल्ट्रामाइक्रोटाम मशीन जरमनी से 2.63 करोड़ रुपए में खरीदी है. इसे विवि के प्लांट पैथोलौजी विभाग में लगाया है. यह मशीन फाइटोप्लाज्म जैसे रोगजनकों के फ्लोरोसैंट माइक्रोस्कोपी में अनुसंधान के लिए बहुत महत्त्व रखती है.

नौणी विश्वविद्यालय में एचपीएचडीपी परियोजना के नोडल अधिकारी और निदेशक अनुसंधान डा. रविंदर शर्मा ने बताया कि इस उपकरण के आने से वैज्ञानिक कुछ ही घंटों में सेब और आड़ू सहित अन्य फलसब्जियों में रोगजनकों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों की पहचान सकेंगे. ■

धान के खैरा रोग के लक्षण, वजह और उस का प्रबंधन

- प्रोफैसर रवि प्रकाश मौर्य

धान की फसल इस समय खेतों में लहलहा रही है. परंतु जितना उत्पादन होना चाहिए उतना नहीं हो पा रहा है. इस की एक प्रमुख वजह मानसून की अनिश्चितता, किसानों को सही तकनीकी जानकारी की कमी के साथ ही साथ फसलों पर लगने वाले विभिन्न प्रकार के कीटों व रोगों का प्रकोप भी है. इन्हीं रोगों में से एक महत्त्वपूर्ण रोग है धान का खैरा रोग.

रोग की वजह : यह रोग जिंक नामक पोषक तत्त्व की कमी के चलते होता है. जिंक पौधों के लिए एक आवश्यक पोषक तत्त्व है और यह एंजाइम का ही भाग होता है, जो औक्सिन संश्लेषण व शर्कराओं के औक्सीकरण से संबंधित होता है.

धान में खैरा रोग केवल उस भूमि में ही होता है, जिन में इस पोषक तत्त्व की कमी होती है. यह रोग उन मिट्टियों में भी पाया जाता है, जिन मिट्टियों में जिंक की उपस्थिति होने पर भी मिट्टी क्षारता या किसी अन्य वजह से यह पोषण तत्त्व पौधों को उपलब्ध नहीं हो पाता है.

रोग के लक्षण : इस रोग का सर्वप्रथम लक्षण पौधशाला में या धान की रोपाई के 10 से 15 दिन बाद खेतों में छोटेछोटे टुकड़ों के रूप में दिखाई पड़ने लगता है.

सर्वप्रथम रोग के लक्षण पौधों की पत्तियों के आधार पर हरिमाहीनता के रूप में प्रकट होते है और रोगी पौधों की पत्तियों पर छोटेछोटे भूरे रंग के धब्बों के रूप में प्रकट होते हैं, जो समय के साथ बढ़ते हुए पत्तियों के सभी भागों में फैल कर कत्थई रंग में बदल जाते हैं. इस से पूरी पत्तियां सूखने लगती हैं.

यदि दूसरे लक्षण के रूप में देखा जाए, तो रोगग्रस्त पौधे छोटे रह जाते हैं और उन की जड़ों का विकास भी रुक जाता है. पौधों में या तो बालियां बन ही नहीं पाती हैं या बनती भी हैं, तो उन बालियों में दानों की संख्या कम हो जाती है, जिस से फसल के उत्पादन में भारी गिरावट देखी जाती है.

यदि यह रोग उग्र रूप में होता है, तो पूरी फसल ही नष्ट हो जाती है. इस वजह से किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है.

यों करें प्रबंधन : धान की फसल पर 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 20 किलोग्राम यूरिया को 1,000 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें. ■

Divisa

NO. 1 BRAND INDIA 2016

No More CONSTIPATION!

If you are suffering from **Constipation, Gas or Acidity,** then use **'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets** today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.

Raju Srivastav

20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use

CONSTIPATION

ACIDITY

GAS

Dr. Juneja's®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

20% EXTRA
पेट सफा

हराभरा स्मार्ट गांव

पिपलांत्री देश में ही नहीं विदेशों तक धमक

✻ इंजी. आशा शर्मा

राजस्थान के राजसमंद जिले का पिपलांत्री गांव देशविदेश के मानचित्र पर किसी परिचय का मोहताज नहीं है. गूगल पर गांव का नाम डालते ही इस के इतिहास से ले कर वर्तमान तक की कई कहानियों और तसवीरों के लिंक यहां दिखाई देने लगते हैं.

मैं ने भी इस गांव की बहुत चर्चा सुनी थी. पिछले दिनों एक अल्प प्रवास पर राजसमंद जाने का मौका मिला और इस से भी बड़ी बात यह रही कि जिस इनसान से मिलना था, वे इस गांव में संस्कृत विषय के प्रथम श्रेणी अध्यापक हैं. उन्हीं के सहयोग से गांव की संपूर्ण विकास की यात्रा जाननेसमझने और देखने का अवसर मिला और इस के नायक से मिलने को भी मन लालायित हुआ.

विकास की इस यात्रा के संचालक पूर्व सरपंच और वर्तमान सरपंच पति श्याम सुंदर पालीवाल से विशेष भेंट और बात करने का भी मौका मिला. तो आइए जानते हैं, गांव के विकास की कहानी उन्हीं की जबानी:

गांव की तसवीर पहले क्या थी और आप को क्यों लगा कि इसे बदलना चाहिए?

साल 2005 में जब मैं सरपंच बना, उस के बाद लगातार कई सालों तक यहां अकाल पड़ा. पानी पाताल में चला गया. पेड़पौधे, जमीन, पहाड़ियां... सबकुछ सूख गया. तब मुझे लगा कि इस समस्या का कोई टिकाऊ समाधान निकालना चाहिए. चूंकि हम किसान परिवार से हैं, इसलिए खेती हमारे खून में है. जल संरक्षण भी हम ने अपने पुरखों से सीखा था, लेकिन कभी काम में नहीं लिया.

उस अकाल के समय हमारे गांव की स्थिति बाकी जगहों से अधिक खराब थी, क्योंकि यहां मार्बल खनन का काम होता है और बाहरी लोगों का आनाजाना बराबर लगा रहता है, इसलिए यहां की आबादी अन्य जगहों से अधिक थी.

उन भयावह हालात से निबटने के लिए हम ने इस पर योजना बना कर काम शुरू किया और आज नतीजा पूरी दुनिया के सामने है.

खनन और अकाल के कारण यहां की पहाड़ियां बिलकुल सूनी हो गईं. उन्हें फिर से हराभरा बनाने के लिए आप ने जो किया, वह सारी दुनिया देख रही है, लेकिन कैसे किया ये, हम आप से जानना चाहते हैं?

अकाल तो एक बड़ा कारण था ही. चूंकि यहां मार्बल की खानें हैं, इसलिए जाहिर सी बात है कि यहां खनन का मलबा भी बहुत होता है. कुछ तो खनन के लिए विस्फोटक इस्तेमाल करने से और कुछ उस मलबे के कारण भी बहुत से पहाड़ बंजर हो गए. ऐसे में जल और वन संरक्षक की आवश्यकता तो महसूस की ही जा रही थी.

साल 2006 में मेरी बेटी की मौत हो गई. उस की याद में मैं ने पेड़ लगाने का निश्चय किया. उस के बाद मैं ने तय किया कि सिर्फ एक बेटी नहीं, बल्कि पंचायत की हर बेटी के नाम पेड़ लगाने का काम करेंगे.

फिर हम ने इस वृक्षारोपण को एक उत्सव के रूप में मनाना शुरू किया, जिस में रक्षाबंधन के अवसर पर बेटियां इन पेड़ों को राखी बांधती हैं और हम सब मिल कर उन की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं. हम गांव में किसी की मौत

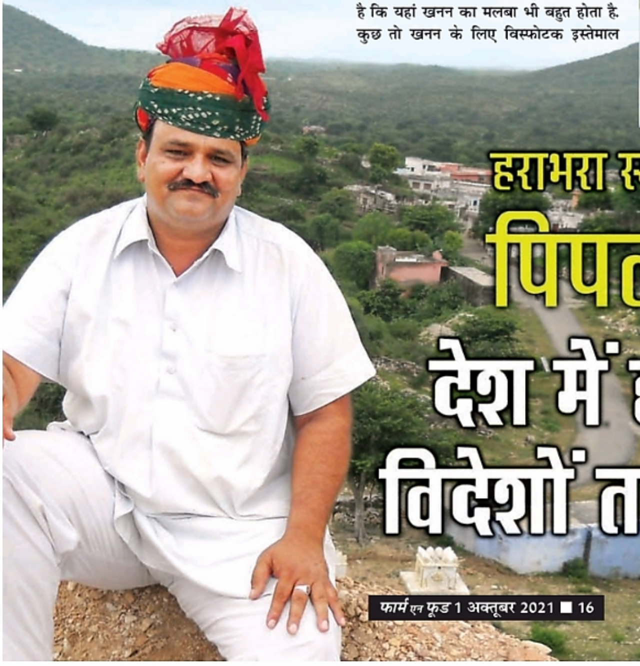

होने पर उस की याद में भी पौधा लगाते हैं.

धीरेधीरे ये बंजर पहाड़ियां फिर से हरीभरी होने लगीं. इस से बाकी लोगों को भी ऐसा करने की प्रेरणा मिली और देश में बहुत सी पंचायत समितियों ने हमारी पहल को सराहा और अपनाया भी.

जो काम आप की पंचायत समिति ने किए और कर रही है वो तो सभी पंचायत समितियां करती होंगी, फिर आप के मौडल को इतनी सराहना क्यों मिली?

अकसर ही लोग सोचते हैं कि गांव में सड़कनालियां बनाने और अपनी पार्टी का वोट बैंक बढ़ाने के अलावा सरपंच का कोई विशेष काम नहीं होता, लेकिन पंचायत का असल काम तो गांव का सर्वांगीण विकास करना होता है और लोग उसी में चूक जाते हैं.

सर्वांगीण विकास के लिए इन सब के साथसाथ यह भी जरूरी है कि गांव स्वच्छ हो, पानी का संरक्षण हो, बेटियां न केवल बचें बल्कि पढ़ें और आगे भी बढ़ें. गांव में पशुधन बढ़े, गोचर भूमि संरक्षित हो, वन्य जीव भी बढ़ें और हरेक हाथ को रोजगार भी मिले.

हमारी पंचायत समिति ने इन्हीं मुद्दों पर ध्यान दिया और आज हमारे गांव में स्वच्छता के प्रति इतनी अधिक जागरूकता है कि कोई भी व्यक्ति खुले में शौच नहीं जाता.

हम चाहते हैं कि गांव की मैनपावर गांव में ही रहे, इसलिए हम यहां नर्सरी में विभिन्न तरह के पौधे तैयार कर के किसानों को उपलब्ध करवाते हैं, ताकि वे उन्नत किस्म की फसल का लाभ ले सकें और अपने गांव, अपने खेत से उन का जुड़ाव रहे.

क्या आप को सरकार से किसी तरह की कोई मदद मिलती है?

हम जो भी योजनाएं चला रहे हैं, वे सभी सरकार द्वारा जारी नीतियों पर ही आधारित हैं. हम ने बहुत से काम तो सरकार की नरेगा योजना में ही करवाए हैं.

दरअसल, बहुत सी सरकारी योजनाओं की जानकारी तो आम जनता विशेषकर किसानों को नहीं होती. हमारा प्रयास रहता है कि इन योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिले और सरकार अपनी योजनाओं में सफल हो.

हम ने प्रण लिया है कि ना तो अपने घर से कुछ लगाएंगे और न ही अपने घर कुछ ले कर जाएंगे. सरकारी अधिकारियों से भी काम करवाएंगे और हम सब भी अपनाअपना काम पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ करेंगे. कुलमिला कर तेरा तुझ को अर्पण की तर्ज पर हम काम कर रहे हैं.

ये तो हुई सरकार की नीतियों की बात, इन योजनाओं में आप की पंचायत का व्यक्तिगत सहयोग क्या रहता है?

हम सहयोग के आधार पर कुछ अंशदान इकट्ठा करते हैं और हर पैदा होने वाली बेटी के नाम पर 31,000 रुपए फिक्स डिपोजिट करवाते हैं. हर बेटी के जन्म पर उस के नाम 111 पौधे लगाए जाते हैं, जिन की देखभाल की जिम्मेदारी उस के घर वालों को सौंपी जाती है.

व्यक्तिगत रूप से सहयोग की बात करें, तो हम ने लोगों में समानता का भाव जगाने की कोशिश की है, उन की आदतों को बदलने का प्रयास किया है, ताकि वे स्वच्छता का महत्त्व अपने जीवन में उतारें और स्वेच्छा से बेटी, जल, वृक्ष, पशुधन और वन्य जीवों के संरक्षण को अपना पहला कर्तव्य समझें. आदत बदलना बहुत ही चुनौती भरा काम होता है. हमें खुशी है कि हम ने यह कर दिखाया.

श्याम सुंदर पालीवाल के प्रयासों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बहुत सराहना और प्रोत्साहन मिला है. आप की कहानी हर घर तक पहुंचे, इस के लिए आप को 'कौन बनेगा करोड़पति' टीम की तरफ से 'कर्मवीर' के रूप में इस टीवी शो के एक विशेष एपिसोड में आमंत्रित किया गया था.

गांव के आदर्श मौडल की कहानी को राजस्थान के सरकारी स्कूलों की 7वीं व 8वीं क्लास में भी पढ़ाया जाता है. डेनमार्क के प्राइमरी स्कूल में भी इस गांव का उदाहरण दिया जाता है.

देश के प्रधानमंत्री ने आप को 2 बार बुला कर आप की पीठ थपथपाई है और कई दूसरे राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी आप के प्रयासों को सम्मानित किया है.

सब से अधिक खुशी की बात है कि आप को अपने अभिनव प्रयासों के लिए हाल ही में भारत सरकार ने 'पद्मश्री' की घोषणा की है.

देशविदेश से लोग यहां प्रशिक्षण लेने आते हैं. इस काम के लिए जलदाय विभाग ने यहां विशेष रूप से अपने अधिकारियों को तैनात किया है.

गांव को अब पर्यटन के रूप में विकसित किया जा रहा है. यहां पर्यटकों के ठहरने की उत्तम आधुनिक सुविधा है. यहां गांव की महिलाओं द्वारा एक आर्गेनिक रसोई का संचालन भी किया जा रहा है. इन सब से होने वाली आमदनी को गांव के विकास में ही खर्च किया जाता है. यहां से शुरू हुए कई नवाचार पूरे देश में अपनाए गए हैं, जिन में 'रात्रि चौपाल' प्रमुख है. ■

उच्च प्राथमिक विद्यालय,पिपलांत्री खुर्द

अक्तूबर महीने में जानें खेती से जुड़े काम

✱ बृहस्पति कुमार पांडेय

खेतीबारी के नजरिए से अक्तूबर का महीना बहुत ही खास होता है. इस महीने जहां खरीफ की ज्यादातर फसलों की कटाई और मड़ाई का काम जोरशोर से किया जाता है, वहीं रबी सीजन में ली जाने वाली फसलों की रोपाई और बोआई का काम भी तेजी पर होता है.

किसान खेती, बागबानी, मछलीपालन, मधुमक्खीपालन, पशुपालन, मशरूम उत्पादन आदि से अच्छी पैदावार और लाभ लेने के लिए इन कामों को अक्तूबर महीने में समय से निबटाएं.

अगर आप ने धान की फसल की कटाई कंबाइन से कराई है, तो पराली न जलाएं. इस से मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्त्व व लाभदायक कीट नष्ट हो जाते हैं. साथ ही, इस से मिट्टी की उर्वराशक्ति क्षीण होने लगती है. ऐसे में ली जाने वाली फसल का उत्पादन घट सकता है.

वहीं पराली प्रबंधन यानी फसल अवशेष प्रबंधन के लिए स्ट्रा चौपर, सुपर सीडर, स्ट्रा बेलर, स्ट्रा रीपर, रीपर कम बाइंडर, श्रब मास्टर, रोटरी स्लेशर, कटर कम स्प्रैडर जैसे यंत्रों का इस्तेमाल किया जा सकता है.

ध्यान रखें कि अक्तूबर महीने में फसल की कटाई के उपरांत ज्यादातर खेत खाली हो चुके होते हैं और किसान रबी सीजन में ली जाने वाली फसलों की बोआई की तैयारी कर रहे होते हैं. ऐसी अवस्था में मिट्टी में संतुलित उर्वरकों की मात्रा के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए खाली खेत से मिट्टी के नमूने ले कर मिट्टी जांच प्रयोगशाला में जरूर भेज दें. इस से मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैशियम, सल्फर, जिंक, लोहा, तांबा, मैंगनीज व दूसरे सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की दी जाने वाली मात्रा का पता चल जाता है, वहीं खरीफ फसलों की मड़ाई के बाद उचित भंडारण के लिए नई बोरियों का प्रयोग करें.

अक्तूबर महीने में खेतीबारी से जुड़े यंत्रों का उपयोग ज्यादा होता है. ऐसे में प्रतिदिन काम शुरू करने से पहले व बाद में यंत्रों की साफसफाई कर लेनी चाहिए. जरूरत पड़ने पर पानी से भी सफाई करें. काम करने से पहले व बाद में यंत्रों के नटबोल्ट की जांच जरूर करें. नटबोल्ट तुरंत दुरुस्त कर दें. मशीन की बेयरिंग व अन्य घूमने वाले भागों में मोबिल औयल व ग्रीस जरूर डालें. समयसमय पर यंत्रों की सर्विस का काम जरूर कराएं.

अक्तूबर महीने में धान की बालियों का रस चूसने वाले गंधीबग कीट के रस चूस लेने के कारण दाने नहीं बनते हैं, जिस से बालियां सफेद दिखाई देने लगती हैं. इस की रोकथाम के लिए ट्राइजोफास या मैथोमिल 1 लिटर मात्रा को 500-600 लिटर पानी में मिला कर प्रति हेक्टेयर की दर से फूल आने के समय बुरकाव करें.

इस महीने धान में भूरे फुदके का प्रकोप भी देखा गया है, जिस में पौधे से रस चूस लेने के कारण पौधे सूख कर गिर जाते हैं और फसल झुलस सी जाती है. ऐसे में इस की रोकथाम के लिए खेत से पानी निकाल दें व नीम औयल 2.5 लिटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500-600 लिटर पानी में घोल कर छिड़काव करें. वहीं चूहों के नियंत्रण के लिए जिंक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्युमिनियम फास्फेट की गोली का प्रयोग करें.

धान की कटाई से एक हफ्ते पहले खेत से पानी निकाल दें. जब पौधे पीले पड़ने लगें व बालियां तकरीबन पक जाएं, तो समय से फसल की कटाई कर लें.

गेहूं की अगेती फसल लेने वाले किसान अक्तूबर महीने के अंतिम सप्ताह से बोआई शुरू कर सकते हैं. इस के लिए उपयुक्त किस्में एचयूडब्ल्यू-533, के-8027, के-9351, एचडी-2888, के-8962, के-9465 और के-1317 हैं.

जौ की अगेती फसल लेने के लिए किसान 15 अक्तूबर के बाद से बोआई शुरू कर सकते हैं. इस के लिए उन्नत छिलके वाली प्रजातियों में ज्योति (के-572/10), आजाद (के-125), हरित (के-560), प्रीति, जाग्रति, लखन, मंजुला, नरेंद्र जी-1 व 2 और 3, आरडी-2552 शामिल हैं, जबकि छिलकारहित प्रजातियों में गीतांजली (के-1149), नरेंद्र जौ 5 और उपासना, इसी को हम एनडीवी 934 कहते हैं जैसी प्रजातियां शामिल हैं. माल्ट के लिए के-508, ऋतंभरा (के-551), रेखा और डीएल-88, बीसीयू-3, डीडब्ल्यूआर-2 आदि प्रजातियां उपयुक्त पाई गई हैं.

शरदकालीन गन्ने की खेती के लिए अक्तूबर का महीना उपयुक्त होता है. शरदकालीन गन्ने के बीज के पिछले वर्ष शरद ऋतु में बोए गए गन्ने से बीज प्राप्त करें. शरदकालीन गन्ना बोआई में लाइनें 2 फुट दूर रखें. यदि लाइनों की दूरी 3 फुट रखते हैं, तो बीच में आलू की भी फसल ली जा सकती है.

गन्ने को खेत में बोने से पहले थिरम व कार्बोक्सिन दोनों 37.5 फीसदी डब्ल्यूपी 250 ग्राम मात्रा सौ लिटर पानी में घोल कर उस से 25 क्विंटल गन्ने के टुकड़े उपचारित किए जा सकते हैं.

MAJOR ZONE
LOCAL AREA

जिन किसानों ने कपास की खेती की है, वह देशी कपास की चुनाई 8-10 दिन के अंतराल पर करते रहें. इस महीने अमेरिकन कपास भी चुनाई के लिए तैयार हो जाती है. चुने हुए कपास को सूखे गोदामों में रखें.

जो किसान शीतकालीन मक्का की खेती करना चाहते हैं, वे उपयुक्त सिंचाई वाली जगहों पर अक्तूबर महीने के आखिर तक बोआई जरूर कर लें.

मक्के की संकर प्रजातियों के लिए प्रति हेक्टेयर 18-20 किलोग्राम व अन्य प्रजातियों के लिए 20-25 किलोग्राम बीज की जरूरत होती है.

जो किसान चने की खेती करना चाहते हैं, वे चने की बोआई अक्तूबर महीने के दूसरे पखवारे से शुरू कर दें. चने की बोआई के लिए उन्नत प्रजातियों में पीडीजी-3 व 4, जीपीएफ-2, पीबीजी-1, जीएल-769, सी-235, एच-208, जी-24, हरियाणा चना 1 व 3, गौरव पूसा-256, राधे, के-850, पूसा-208, पूसा 547, ऊसर क्षेत्र में बोआई के लिए करनाल चना-1 शामिल हैं.

इस के अलावा काबुली चना की एच-144, गोरा हिसारी, हरियाणा काबली-1, बीजी-1073, एल-771, एल-770, पूसा-1003, पूसा 5023, चमत्कार, शुभ्रा किस्मों की बीआई की जा सकती है. इस के लिए एक हेक्टेयर खेत में 70 से 90 किलोग्राम बीज की जरूरत पड़ती है.

चने की फसल को उकठा रोग से बचाने के लिए ढाई किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 50 किलोग्राम गोबर की खाद में मिला कर कल्चर तैयार कर लें. इस तैयार कल्चर को एक हफ्ते पूर्व खेत में मिला दें. साथ ही, ट्राइकोडर्मा की 10 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज का उपचार करना चाहिए.

फसल को बीमारयों से बचाने के लिए 1.7 ग्राम बाविस्टीन और 1.7 ग्राम थिरम प्रति किग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित करें. वहीं फसल को दीमक से बचाव के लिए ब्युवेरिया बैसियाना की ढाई किलोग्राम मात्रा को 50 किलोग्राम गोबर में मिला कर मिट्टी उपचारित करें. चने के बीजों को ढाई ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से राइजोबियम जैव खाद से उपचारित कर के ही बोएं.

जिन किसानों ने अरहर की अगेती फसल ले रखी है, वे फसल को फली छेदक कीट से बचाने के लिए इंडोक्साकार्ब 14.8 ईसी 325 मिली. 500-600 लिटर पानी में मिला कर 15-20 दिन के अंतराल पर 2 छिड़काव करें.

अरहर में 70 फीसदी फलियां लगने पर स्पाइनोसेड 5 फीसदी एससी की 750 मिलीलिटर मात्रा को 500 लिटर पानी में घोल कर छिड़कें. इस से फली छेदक कीट की रोकथाम हो सकेगी.

मसूर की बोआई अक्तूबर महीने के आखिरी सप्ताह से नवंबर महीने के दूसरे हफ्ते तक बो दें. इस की उन्नत किस्में एल-9-12, सपना, गरिमा, एलएल-699 व 147 हैं. इस के बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर के ही बोएं.

जो किसान दाल वाली मटर की किस्मों की खेती करना चाहते हैं, वे अक्तूबर महीने के अंतिम सप्ताह से इस की बोआई शुरू कर दें. इस की उन्नत किस्मों में फील्ड पी-48, पीजी-3, अपर्णा, जयंती, उत्तरा व टाइप-163 रचना, पंत मटर-5, मालवीय मटर-2, मालवीय मटर-15, शिखा और सपना प्रमुख हैं. बीमारियों से बचाव के लिए बाविस्टीन से बीजोपचार करें और मटर राइजोबियम जैव खाद से उपचारित करें.

अक्तूबर के आखिरी हफ्ते से नवंबर के पहले सप्ताह तक अलसी की बोआई का उचित समय होता है. इस फसल को चिकनी दोमट व अच्छे जल निकास वाली मिट्टी में और धान की फसल के बाद उगाया जाता है.

अलसी की गरिमा, श्वेता, शुभ्रा, लक्ष्मी-27, पद्मिनी, शेखर, शारदा, मऊ आजाद, गौरव, शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि, के-2, एलसी-2023 व एलसी-74 किस्मों की बोआई की जा सकती है. इस के लिए 20 किलोग्राम बीज को 50 ग्राम थिरम व कार्बोक्सिन मिश्रण से उपचारित करें.

मूंगफली की खेती करने वाले किसान फलियों की बढ़वार की अवस्था पर सिंचाई करें. इस से फसल की खुदाई भी आसान हो जाती है. इस के अलावा इस पर विशेष ध्यान दें कि मानसून खत्म होने के बाद चैंपा नाम का कीट मूंगफली के पौधों का रस चूसता है. इस की रोकथाम के लिए 1 लिटर फिब्रोनिल 25 प्रतिशत ईसी को 500-600 लिटर पानी में मिला कर छिड़कें.

अक्तूबर महीने का पहला पखवारा राई की बोआई के लिए सब से उपयुक्त माना जाता है. इस समय बोआई के लिए उन्नत प्रजातियों में वरुणा, नरेंद्र राई-8501, शिवानी, पूसा बोल्ड, कांति, पूसा महक, पूसा अग्रणी उपयुक्त होती हैं.

अक्तूबर महीने में बोआई के लिए सरसों की पूसा तारक, पूसा विजय, पूसा सरसों 22, पूसा करिश्मा, पूसा बोल्ड, पूसा सरसों-27 उपयुक्त पाई गई हैं.

प्याज की नर्सरी अक्तूबर महीने के दूसरे सप्ताह से नवंबर महीने के दूसरे हफ्ते के बीच डालें. इस के लिए ऊंचा बैड बनाएं. इस की उन्नत किस्मों में भीमा सुपर, भीमा गहरा लाल, भीमा लाल, भीमा श्वेता, भीमा शुभ्रा, अलो ग्रनो, पूसा रैड, पूसा रतनार, पूसा ह्वाइट पलैट, पूसा ह्वाइट राऊड व पूसा माधवी शामिल हैं.

टमाटर की खेती के लिए अक्तूबर महीने में नर्सरी डालें, जिस से उस के पौधों को नवंबर के दूसरे सप्ताह तक रोपा जा सके. इस की उन्नत किस्मों में नामधारी-4266, पूसा रूबी, पूसा अर्ली ड्वार्फ, पूसा-120, मारग्लोब, पंजाब छुआरा, सलैक्शन-120, पंत बहार, अर्का विकास, हिसार अरुणा (सलैक्शन-7), एमटीएच-6, एचएस-101, सीओ-3, सलेक्शन-152, पंजाब केसरी, पंत टी-1, अर्का सौरभ, एस-32, डीटी-10. संकर किस्में कर्नाटक हाईब्रिड, रश्मि, सोनाली, पूसा हाईब्रिड-1, पूसा हाईब्रिड-2, एआरटीएच-1 या 2 या वी 3, एचओई-606, एनए-601,

बीएसएस-20, अविनाश-2, एमटीएच-6 शामिल हैं.

अक्तूबर महीने में फूलगोभी की पूसा स्नोबाल-1, पूसा स्नोबाल-2, स्नोबाल-16 व पूसा स्नोबाल के-1 किस्में नर्सरी में बोई जा सकती हैं. इन किस्मों को नर्सरी में डाले जाने के 4 हफ्ते बाद खेत में रोपा जा सकता है.

गांठगोभी की रोपाई पूरे माह 30×20 सैंटीमीटर के अंतर पर करें और रोपाई के समय प्रति हेक्टेयर 35 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फास्फेट व 50 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग करें.

अक्तूबर का महीना पालक व मेथी की बोआई व सितंबर महीने में बोई गई फसल की कटाई के लिए सही होता है. पालक पूसा भारती, मेथी - पूसा अर्ली बंचिंग अच्छी होती है. सितंबर महीने में बोई फसल को बोआई के 30 दिन बाद काट सकते हैं.

मूलीगाजर अक्तूबर महीने में बोई जा सकती है. मूली की ह्वाइट आइसकिल, रैपिड रैड ह्वाइट टिप्ड, स्कारलेट ग्लोब, पूसा हिमानी, गाजर की पूसा रुधिरा (लाल), पूसा वसुधा (संकर), पूसा असिता (काली) की बोआई करें.

आलू की अगेती किस्मों में कुफरी अशोका, कुफरी चंद्रमुखी, कुफरी जवाहर की बोआई 10 अक्तूबर तक और मध्य व पिछेती फसल के लिए कुफरी बादशाह, कुफरी सतलज, कुफरी पुखराज, कुफरी लालिमा की बोआई 15-25 अक्तूबर तक करें.

लहसुन को अक्तूबर माह में लगाएं. इस की उन्नत किस्में भीमा ओंकार, भीमा पर्पल, यमुना सफेद (जी-1), एग्रीफाउंड ह्वाइट (जी-41), गोदावरी (सलैक्सन-2), टी-56-4, एग्रीफाउंड पार्वती (जी-313) हैं.

सब्जी मटर की अगेती किस्मों के लिए प्रति हेक्टेयर 120-150 किग्रा. बीज का प्रयोग करें. सब्जी मटर के लिए बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फेट व 40 किग्रा. पोटाश का प्रयोग करें.

अक्तूबर महीने में पपीता की रोपाई करें और पहले रोपे गए पपीते को तना गलन रोग से बचाने के लिए मैंकोजेब 65 फीसदी व कार्बेंडाजिम 12 फीसदी डब्ल्यूपीसी की 1.2 किलोग्राम मात्रा को 600 लिटर पानी में घोल कर 2 बार छिड़कें.

आंवला में शूट गाल मेकर से ग्रस्त टहनियों को काट कर जला दें. केला प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया, 155 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 200 ग्राम म्यूरेट औफ पोटाश प्रयोग कर भूमि में मिला दें.

अक्तूबर महीने में लीची की मकड़ी यानी लीची माइट की रोकथाम के लिए समयसमय पर ग्रसित पत्तियों व टहनियों को काट कर जला देना चाहिए. नई कोंपलों के आने से पहले प्रोपारगाइट 57 प्रतिशत ईसी. की एक लिटर मात्रा को 500 लिटर पानी में घोल बना कर 7-10 दिन के अंतराल पर 2 छिड़काव लाभप्रद पाया गया है.

केला पौधों के नीचे पुआल अथवा गन्ने की पत्ती की 8 सैंटीमीटर मोटी परत बिछा देनी चाहिए. इस से सिंचाई की संख्या में 40 फीसदी की कमी हो जाती है, खरपतवार नहीं उगते और उपज व भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ जाती है.

काजू के पौधों को प्रारंभिक अवस्था में अच्छा ढांचा देने की जरूरत होती है. उपयुक्त काटछांट के द्वारा पौधों को अच्छा ढांचा देने के तत्पश्चात फसल तुड़ाई के बाद सूखे, रोग व कीट से ग्रसित शाखाओं को कैंची से काटते रहें.

अंगूर में मैंकोजेब 65 फीसदी व कार्बेंडाजिम 12 फीसदी डब्ल्यूपीसी की 1.2 किलोग्राम मात्रा को 600 लिटर पानी में घोल कर एंथ्रेक्नोज की रोकथाम के लिए छिड़कें, वहीं फूलों की खेती के लिए यह महीना खास होता है. ग्लेडियोलस की पूसा शुभम, पूसा किरन, पूसा मनमोहक, पूसा विदुषी, पूसा सृजन व पूसा उन्नति किस्मों की बोआई करें.

ग्लेडियोलस के लिए बीज दर 1.5 लाख कंद प्रति हेक्टेयर रखें. इस के कंदों को 2 ग्राम बाविस्टीन एक लिटर पानी की दर से घोल बना कर 10-15 मिनट तक डुबो कर उपचारित करने के बाद 20-30×20 सैंटीमीटर पर 8-10 सैंटीमीटर की गहराई में रोपाई करें. रोपाई से पहले क्यारियों में प्रति वर्गमीटर 5 ग्राम कार्बोफ्यूरान अवश्य मिलाएं.

गुलाब के पौधों की कटाईछंटाई कर कटे भागों पर डाईथेन एम. 45 का 2 ग्राम प्रति लिटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें.

पशुपालक अपने पशुओं को खुरपकामुंहपका रोग का टीका लगवाएं. पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलाएं. समयसमय पर गर्भ परीक्षण व बांझपन की जांच कराते रहें. स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लिए पशुओं, स्वयं, वातावरण और बरतनों की स्वच्छता का खयाल रखें.

मुरगीपालन से जुड़े लोग मुरगियों व चूजों के लिए पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था करें, संतुलित आहार निर्धारित मात्रा में दें. कृमिनाशक दवा पिलवाएं और बिछावन को नियमित रूप से पलटते रहें.

पशुओं के लिए उत्तम हरे चारे के प्रबंध के लिए अक्तूबर महीने में जिन चारा फसलों की बोआई की जाती है, उस में रिजका घास प्रमुख मानी जाती है. रिजका की उन्नत किस्में लुसर्न-9, एलएल कंपोजिट-7 और लुसर्न-टी है. यह किस्म चारे की एक अहम दलहनी फसल है, जो जून माह तक हरा चारा देती है. इसे बरसीम की अपेक्षा सिंचाई की जरूरत कम होती है. इसे अक्तूबर से नवंबर माह के मध्य तक बोया जा सकता है.

बरसीम की बोआई भी 15 अक्तूबर से शुरू कर दें. बरसीम की बोआई के लिए प्रति हेक्टेयर 25-30 किलोग्राम बीज की जरूरत पड़ती है. बोआई के पहले प्रति हेक्टेयर 20-30 किलोग्राम नाइट्रोजन व 80 किग्रा. फास्फेट का प्रयोग करें.

किसान हरे चारे के लिए जई की बोआई अक्तूबर के पहले पखवारे से ले कर नवंबर महीने तक कर सकते हैं. उन्नत किस्मों में ओएल-9, कैंट व हरियाणा जई है. बीज बोते समय खेत में उपयुक्त नमी रहना जरूरी है.

औषधीय फसल ईसबगोल की खेती करने वाले किसान 17 अक्तूबर से 7 नवंबर के बीच इसे बो सकते हैं. बोआई के पहले बीज उपचारित करना ना भूलें. इस के लिए 3 किग्रा. बीज को 9 ग्राम थिरम से उपचारित किया जाता है. ■

नोट- लेख में कीटनाशकों के नाम कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती के वैज्ञानिक फसल सुरक्षा डा. प्रेम शंकर द्वारा सुझाए गए हैं व कृषि यंत्रों के रखरखाव से जुड़ी जानकारी विशेषज्ञ कृषि विज्ञान केंद्र, सुल्तानपुर के वैज्ञानिक कृषि अभियंत्रण इं. वरुण कुमार द्वारा सुझाए गए हैं. बागबानी व सब्जियों की खेती से जुड़ी जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र, चंदौली के उद्यान विशेषज्ञ डा. दिनेश यादव द्वारा सुझाए गए हैं.

पशुपालन को बनाएं उद्योग

✻ भानु प्रकाश राणा

खेती के साथसाथ अनेक ऐसे काम किए जा सकते हैं, जो किसानों को अतिरिक्त मुनाफा तो देते ही हैं, साथ ही रोजगार भी मिल जाता है. ऐसा ही काम है पशुपालन, जो किसानों के लिए बेहतर आमदनी का जरीया हो सकता है. सरकार की भी अनेक योजनाएं पशुपालन के क्षेत्र में आती रहती हैं, जो किसानों की राह आसान बनाती हैं.

पिछले कुछ समय में भारत सरकार ने किसानों और पशुपालकों को ले कर लगातार योजनाएं लौंच की हैं.

केंद्र सरकार ने आत्मनिर्भर भारत के तहत पशुपालन अवसंरचना विकास निधि यानी एनीमल हसबैंडरी इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमैंट फंड (एएचआईडीएफ) के लिए 15,000 करोड़ रुपए भी आवंटित किए हैं.

योजना के उद्देश्य

☛ दूध और मांस प्रसंस्करण की क्षमता और उत्पाद में विविधीकरण को बढ़ाना.

☛ पशुपालकों को दूध और मांस पर सही रेट उपलब्ध कराना.

☛ घरेलू उपयोग के लिए गुणवत्तापूर्ण दूध और मांस उत्पाद उपलब्ध कराना.

☛ देश की बढ़ती आबादी की प्रोटीन समृद्ध गुणवत्ता वाले भोजन की आवश्यकता को पूरा करना.

☛ कुपोषण को खत्म करना.

☛ उद्यमिता विकसित करना और रोजगार पैदा करना.

☛ दूध और मांस के क्षेत्र में निर्यात योगदान बढ़ाने के लिए.

☛ मवेशियों के लिए सस्ते दाम पर चारा मुहैया कराना.

लगा सकते हैं पशुओं से जुड़े उद्योग

किसान केंद्र सरकार की पशुपालन अवसंरचना विकास निधि यानी एनीमल हसबैंडरी इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमैंट फंड (एएचआईडीएफ) के माध्यम से लोन ले कर पशुओं से जुड़े कई उद्योग लगा सकते हैं.

इन उद्योगों को लगाने के लिए वे बैंकों से लोन के रूप में 90 फीसदी तक की वित्तीय सहायता बाजार से कम ब्याज दर पर ले सकते हैं. साथ ही, किसान उद्यमी मित्र पोर्टल पर जा कर उन बैंकों की सूची भी देख सकते हैं, जो इस तरह के लोन की सुविधा देते हैं.

इन उद्योगों यानी निर्माण इकाइयों के लगाने पर पशुपालन विभाग की तरफ से लोन की सुविधा दी जा रही है :

☛ आइसक्रीम इकाई

☛ पनीर निर्माण इकाई

☛ अल्ट्रा उच्च तापमान (यूएचटी) टैट्रा पैकेजिंग सुविधाओं के साथ दूध प्रसंस्करण इकाई

☛ फ्लेवर्ड मिल्क निर्माण इकाई

☛ मिल्क पाउडर निर्माण इकाई

☛ मट्ठा पाउडर निर्माण इकाई

☛ विभिन्न प्रकार के मांस प्रसंस्करण इकाई

ऐसे करें लोन के लिए आवेदन

एनीमल हसबैंडरी इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमैंट फंड यानी एएचआईडीएफ के तहत लोन के लिए आवेदन करना बेहद ही आसान है. इस के लिए सब से पहले उद्यमी मित्र पोर्टल पर जा कर रजिस्ट्रेशन करना होगा. इस के बाद आप के सामने आवेदन प्रकिया को शुरू करने के लिए पेज खुल कर सामने आ जाएगा. वहां आप लोन के लिए आवेदन दे सकते हैं.

आवेदन देने के बाद पशुपालन विभाग के द्वारा आप की एप्लीकेशन की समीक्षा की जाएगी. विभाग से अनुमति मिलने के बाद बैंक/ऋणदाता द्वारा लोन की स्वीकृति दे दी जाएगी. इस के बाद सभी जरूरी प्रकियाएं पूरी कर किसान के खाते में लोन की राशि ट्रांसफर कर दी जाती है.

इस योजना के बारे में किसान अगर और अधिक जानना चाहते हैं, तो उद्यमी मित्र पोर्टल पर जानकारी ले सकते हैं. ■

स्वादसुगंध से भरपूर अल्पान केला (बिहार का चीनिया केला)

*** भानु प्रकाश राणा**

अल्पान केले को विभिन्न प्रदेशों में चंपा, चीनी चंपा, चीनिया, डोरा वाज्हाई, कारपुरा चाक्काराकेली इत्यादि नामों से जानते हैं. ये सभी प्रजातियां मैसूर समूह में आती हैं.

स्वाद और सुगंध से भरपूर यह प्रजाति किसानों के लिए फायदे की फसल होती है. डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार के प्रोफैसर सह मुख्य वैज्ञानिक (पौधा रोग) डाक्टर एसके सिंह ने बताया कि यह बिहार, तमिलनाडु, बंगाल व असम की एक मुख्य व प्रचलित किस्म है. इस का पौधा लंबा और पतला होता है. फल छोटे, उन की छाल पीली और पतली, कड़े गूदेदार, मीठा, कुछकुछ खट्टा व स्वादिष्ठ होता है.

फलों का घौंद 20-25 किलोग्राम का होता है. प्रति घौंद 20-22 हत्था और प्रति हत्था 20-22 फिंगर्स (केला) होता है. इस प्रकार से कुल फलों की संख्या 250-450 हो सकती है. प्रकंद से लगाने पर फसल चक्र 16-17 महीने का होता है.

केले की खेती के लिए 6 से 7.5 पीएच मान की अम्लीय मिट्टी काफी अच्छी मानी जाती है. खेतों की मिट्टी की जांच कराने के बाद उस का सही इलाज कर के किसी भी खेत में केले की खेती की जा सकती है.

केले की खेती के लिए सब से अच्छी बात यह है कि इसे सालभर में कभी भी लगाया जा सकता है. इस के पौधों को मजबूत बनाने के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियम की जरूरत होती है. प्रति हेक्टेयर केले के 3,630 पौधे ही लगाने चाहिए और पौधों के बीच तकरीबन 1.82 मीटर की दूरी रखनी चाहिए.

चीनिया केला बिहार की लोकप्रिय किस्म है. इस के पौधे केले की दूसरी प्रजातियों की तुलना में ज्यादा कोमल, पतले और कम बढ़वार वाले होते हैं. वैशाली जिले में चीनिया केले की बड़े पैमाने पर खेती की जाती है. इस के अलावा समस्तीपुर और मुजफ्फरपुर जिलों में भी इस की बहुतायत खेती होती है. चीनिया केले का तना लंबा, पतला और हलके रंग का होता है. इस के पत्ते चौड़े और लंबे होते हैं. इस केले की घौंद काफी कसी हुई होती है.

पके हुए चीनिया केले के छिलके का रंग चमकीला पीला होता है. इस के फलों की भंडारण कूवत बाकी किस्म के केलों से बेहतर होती है. पके हुए फलों को कमरे के सामान्य तापमान पर 3-4 दिनों के लिए भंडारित किया जा सकता है.

इस का पौधा पनामा रोग के प्रति कुछ हद तक अवरोधी होता है. इस में केवल धारीदार विषाणु रोग का प्रकोप ज्यादा होता है. लेकिन बिहार के वैशाली इलाके में यह प्रजाति पर पनामा बिल्ट, अंत:विगलन रोग व शीर्ष गुच्छ रोग भी ज्यादा लगता है. भारत में इस प्रजाति के केलों की खेती मुख्यत: बहुवर्षीय पद्धति के आधार पर हो रही है.

अल्पान केले की खूबी यह है कि पकने के बाद इस में सुगंध आने लगती है. यह खाने में स्वादिष्ठ और मीठा होता है.

वैशाली जिले में उत्पादित अल्पान प्रजाति के केले की आपूर्ति देशप्रदेश के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर की जाती है. यहां से केला नेपाल तक जाता है.

बिहार के कई हिस्सों में इस प्रजाति के केले की खेती होती है. इस प्रजाति के केले उत्तर प्रदेश के बलिया, गोरखपुर, वाराणसी, झारखंड के देवघर, रांची, हजारीबाग, कोडरमा सहित बिहार के पटना, बिहारशरीफ, जहानाबाद, गया, छपरा, मुंगेर, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, दरभंगा, मधुबनी, मोतिहारी जिले के कारोबारी यहां से केला ले जाते हैं.

पनामा बिल्ट रोग लगने के कारण भी केले के उत्पादन पर काफी असर पड़ रहा है. इस रोग के प्रबंधन की तकनीक डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पास उपलब्ध है. केवल जरूरत इस बात की है कि इस रोग के प्रति केला उत्पादक किसानों को जागरूक किया जाए. ■

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2014
Consumer Survey Report, MRG 2014

NO.1 BRAND
Helpful in Painful Conditions
Dr. Ortho™ Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल
जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल
नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल
जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल
पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल
विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल
जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल
मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE
सुनो जी, दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए मनाते हैं। पर शरीर की बुराईयों का क्या करें।
अरी भाग्यवान, शरीर की बुराईयों की जड है पेट की बीमारीयाँ जैसे कब्ज, ऐसीडिटी, अपच इत्यादी, जिनका नाश करता है स्टोमाफिट। क्युंकि पेट फिट, तो आप फिट!!
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT
STOMAFIT
CHEWABLE
New Pack
HAEMOCAL
Delicious Taste
Iron Tonic with Folic Acid
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

रखे स्टमक फिट, पेट फिट, आप फिट!!

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

क्रोध, कपट, कटुता, कलह, चुगली या अत्याचार !
दगा, द्वेश, अन्याय या छल ये थे दशानन के हथियार !!
वर्तमान का हथियार है, शरीर में कमजोरी रहना लगातार !
आओ हेमोकॉल के साथ करें इस दशानन पर प्रहार !!

आपको और आपके परिवार को
दशहरे
की हार्दिक शुभकामनाएं

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com
सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें